IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कथक नृत्य मे हुए नवीन प्रयोग (रायगढ़ घराने के संदर्भ में)

नाम- मौलश्री सिंह

पद का नाम- शोधार्थी

विभाग- कथक नृत्य विभाग

संस्थान- इंदिरा कला संगीत विश्वविध्यालय खैरागढ़ छत्तीसहगढ़

संक्षेप – कथक नृत्य उत्तरप्रदेश का शास्त्रीय नृत्य है। जिसका उद्गम 'कथा' वाचन से मान जाता है। इन कथा वाचन करने वालों को ही 'कथक' से संबोधित किया गया है। इस नृत्य की अपनी अलग-अलग शैली विशेषता होने के कारण इसके घराने विभाजित हुए- लखनऊ, जयपुर, बनारस और रायगढ़ घराना। घरानों का नाम किसी व्यक्ति पर ना रख कर उस क्षेत्र या शहर के नाम पर रखा गया है जहाँ उसकी शैली विकसित हुई। मनुष्य के मन मे जब आनंद भरे भावों का श्रीजन होता है तब वह उन भावों को शब्दों या चेहरे के भावों और अंग संचालन क्रिया द्वारा अभिव्यक्त करता है और इन क्रियाओं के लय-ताल के मेल से 'नृत्य' बनाता है। यह मान जाता है की मानव के जन्म के साथ ही नृत्य की उत्पति हुई है। नृत्य दो श्रेणी के माने जाते है – आनंद पूर्वक बिना किसी बंधन के किया गया नृत्य 'लोक नृत्य' मान गया तथा शास्त्र व अध्यात्म से जुड़ा नृत्य 'शास्त्रीय नृत्य' मान गया। भारतीय नृत्य कलाओ में शास्त्रीय नृत्य की श्रेणी मे आते है:-

कथकली, कुचीपुडी, मणिपुरी, कथक, ओडिसी,मोहनीयटटम्, भरतनाट्यम और सत्रिया ।

इन सभी शास्त्रीय नृत्यों का उद्गम अध्यात्म से हुआ है। किन्तु इनका विकास नवीन प्रयोगों द्वारा हुआ है। इन नृत्यों का नामकरण लोक व इनकी प्रकृति से प्रभावित है। ईश्वर की उपासना के लिए इनका प्रयोग हुआ। वर्तमान मे कथक नृत्य देश ही नहीं विदेश मे भी परषिद्ध नृत्य कला है। इस नृत्य के विकास हेतु कई गुरुओं, कलाकारों, विद्वानों और राजाओं आदि ने अपना सर्वस्य लगाया है। जिनमे से एक राजा चक्रधर सिंह भी रहे। छत्तीसगढ़ प्रान्त रायगढ़ के नरेश राजा चक्रधर सिंह जी द्वारा ही कथक नृत्य मे एक नया अध्याय जोड़ा गया वह था कथक का रायगढ़ घराना। इनकी नई विचार

धार और प्रयोगों के कारण घरानों की शृंखला में एक नए घराने को जोड़ा गया जिसकी शैली मे इन तीनों घरानों का मिश्रण प्राप्त होता है। रायगढ़ घराने को अन्य तीनों घरानों का निचोड़ कहे तो कोई अतिसूक्ति नहीं होगी।

सांकेतिक शब्द – कथक, नृत्य, राजा, विकास, प्रयोग ।

कथक शब्द का अर्थ 'कथा' से लिया गया है अर्थात "कथा कहे सो कथक कहलावे" कथा वाचन करते हुए अपने अंग संचालन की क्रियाओं द्वारा उसका अर्थ व्यक्त करना और भाव अभिनय द्वारा रस निरूपित करना ही 'कथक' कहलाता है। पूर्व समय मे कथक एक जाति थी जिसमे व्यक्ति अपने हाथों मे एक दुप्पटा या वाद्य लिए हर चौराहों से गुजरते हुए किसी ऐतिहासिक, पौराणिक या वेदों मे अंकित कथाओं का कथा वाचन करता व उसे और प्रभावशाली बनाने हेतु उसे गीत के रूप मे प्रदर्शित करता। इस कथा वाचन की सहायता से वह नट जन समाज का मनोरंजन तो करता ही था साथ ही उन्हे अध्यात्म से जोड़ता था।

अमरकोश के अनुसार- **शैलालीनस्तु शैलुष जायाजिता कृशाश्विन:।**

भरत इत्यापि नटचाराणास्तु: कुलीलव:।।

अर्थात शैलाली,शैलुष,जायाजीत, कृशाश्व, भरत, चारण तथा कुशीलव छ: नटवर्ग के लोगों के नाम है। रामायण काल मे कथा वाचन करने वालों को 'कुशीलव' से सम्बोधित किया गया है। पाणिनी द्वारा 'कत्थय' धातु का स्पष्टीकरण कर 'कत्थक' शब्द की रचना बताई गई है।

16$^{वी}$ शताब्दी मे कथक केवल कथा वाचन ना होकर पूर्ण रूप से कथक नृत्य का रूप ग्रहण कर चुका था। 16$^{वी}$ से 20$^{वी}$ शताब्दी मध्यकाल के अंतर्गत रहाँ। कथक नृत्य के लिए यह समय नवीनता का समय रहाँ। पूर्व समय मे कथक के नृत्त पक्ष को अर्थहीन व भावहीन मान जाता था। जिसमे केवल अंग संचालन की क्रियाओं पर ध्यान दिया जाता था, किन्तु प्रयोग व नवाचार ने कथक नृत्य को और समृद्ध व अर्थमय बना दिया है। समय के साथ कथक नृत्य मे नवीन तत्वों का समावेश होता गया। जब मंदिरों से यह नृत्य दरबारों तक आया तो इसका संरक्षण कर इसके विकास में कई राजाओं व नवाबों का हाथ रहाँ है। जिसमे सवाई माधव सिंह, नवाब वजीदअलीशाह और रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह जी का नाम सबसे पहली श्रेणी मे आता है। 16$^{वी}$ शताब्दी तक कथक नृत्य दरबारों मे प्रवेश कर चुका था। किन्तु इस नृत्य मे नवीन प्रयोग 18$^{वी}$ शताब्दी से प्रारंभ हुआ। राजा सवाई प्रताप सिंह ने 'राधा गोविंद संगीत सार' ग्रंथ की रचना की इस समय कथक प्रचार मे नहीं आया होगा क्योंकि इस ग्रंथ मे कथक शब्द का उल्लेख प्राप्त नहीं होता। साथ ही इस समय कथक नृत्य को लखनऊ के नवाब वाजिदअलीशाह द्वारा संरक्षण प्राप्त हुआ और कथक नृत्य के शृंगार पक्ष पर ज्यादा कार्य हुआ। नजाकत और अंदाज जैसे शब्दों का समावेश हुआ- आमद, सलामी, ठुमरी, गजल, तराना, गत इत्यादि चीजों का समावेश हुआ। दरबारों मे रसिक प्रवित्ती के लोगों के होने से व स्वयं नवाब वाजीदअलिशाह के रसिक होने से इस नृत्य की मूलता पर प्रभाव पढ़ा। यह नृत्य अपना आधार भूल कर मुजरे के समान परिदृश्य होने लगा। मुजरा वह नृत्य है जिसमे नर्तकी नाजो नजाकत व अदाओ के साथ रसिकों को रिझाने का प्रयास करती है और कथक नृत्य का स्वरूप यह नहीं हो सकता वह तो भक्ति भावना से ओत -प्रोत है।

इतने भटकाव के बाद भी वाजीदअलिशाह के दरबार मे यह नृत्य 'रहस' व 'इंद्रसभा' के स्वरूप मे अध्यात्म से जुड़ा रहाँ। वे श्री कृष्ण के रासलीला से इतने प्रभावित थे की स्वयं कृष्ण का रूप लिए नर्तकियों के साथ रास किया करते थे। सैयद आगाहसन अमानत लिखित इंद्रसभा रहस के आधार पर ही लिखी गई है। इनके दरबार मे कथक नृत्याचार्य बिंदादिन माहाराज रहे। इन्होंने 5000 से भी अधिक ठुमरियों की रचना की और अन्य लखनऊ के कलाकारों ने भी उस समय शृंगार पक्ष पर ही प्रयोग करने मे अधिक ध्यान केंद्रित किया। दरबारों मे उत्तम स्थान पाने हेतु कलाकारों के बीच रही प्रतिस्पर्धा उन्हे प्रयोग की तरफ प्रेरित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका रखती थी।

मंदिरों के टूटने से जो शांति नृत्य व संगीत जगत मे छाई हुई थी वह खत्म होने लगी जब कलाकारों को संरक्षण प्राप्त हुआ। बदलते महोल, रंग, जन-जीवन आदि के कारण कथक मे कई प्रयोग हुए जिससे नवाचार को बड़वा मिला। नवाबों के समय कई गतो का निर्माण हुआ और ग्रंथ रचना भी हुई। लखनऊ मे तब नर्तकों द्वारा कथक के गतों पर विशेष ध्यान दिया गया। अकबर के शासन काल मे बेगमों की चलो पर गत बनाते थे। सुशोभन गमन नामकरण करते हुए स्त्रियोचित गमन और पुरुषोचित गमन को मर्दाना वीरत कहाँ जाता था।

19वी शताब्दी के सुरवाती दशक के पूर्व कथक के घराने व्यक्ति विशेष के नाम से कायम किए जाते थे किन्तु सन् 1895 मे माधो सिंह ने जयपुर मे विद्वानों की सभा बुलाई और घराने के नामकरण को लेकर चले आ रहे मतभेदों को सभा के सामने रखा और सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया की व्यक्ति विशेष के नाम के बजाय स्थान के आधार पर घराने कायम किए जायेगे तब लखनऊ, जयपुर और बनारस घराना कायम हुआ।

कथक नृत्य का पुनः जागरण :-

19वी शताब्दी मे कथक नृत्य का पुनः जागरण रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह जी के द्वारा हुआ। इनका जन्म 19 अगस्त 1905 कृष्ण पक्ष चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) के दिन हुआ। इनके जन्म को शुभ मानते हुए इनके पिता राजा भूपदेव सिंह जी ने भव्य 'गणेश मेला' का आयोजन तो किया ही साथ ही मोती महल की नीव रखी। गोंड जनजाति के शासक होने के कारण इनके पूर्वजों मे संगीत-नृत्य के प्रति प्रेम पहले से ही था। बालपन से ही इन्हे शस्त्रों का ज्ञान करवाया गया साहित्य के साथ संगीत-नृत्य की शिक्षा भी इन्हे प्राप्त हुई। इनके पिता राजा भूपदेव सिंह जी द्वारा कलाकारों को आश्रय पहले से ही प्राप्त करवाया गया था किन्तु कथक नृत्य का विकास राजा चक्रधर सिंह जी द्वारा हुआ। वे एक कलात्मक प्रतिभा सम्मपन, संगीत अनुरागी, काव्य, नृत्यादी कलाओं के मर्मज्ञ होने के साथ-साथ सरल और भावुक हृदय के थे। मोती महल मे आए दिन कलाकारों का आना जाना लगा रहता था, जिससे वहाँ के वातावरण का प्रभाव भी इनके व्यक्तित्व मे हुआ। वे कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे साथ ही इनका चिन्तन भी शोध परख था। इन्होंने बोल बन्दिशों आदि चीजों का संकलन किया साथ ही शास्त्रसंगत कथक नृत्य मे कई नवीन प्रयोग भी किए जो इस नृत्य के सौन्दर्य को और बड़ाता चला गया। अपने शासनकाल मे इन्होंने विशेष कर संगीत कला के संरक्षण और नवजागरण मे महान योगदान दिया।

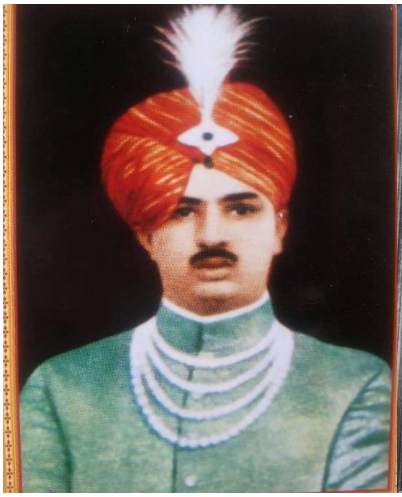

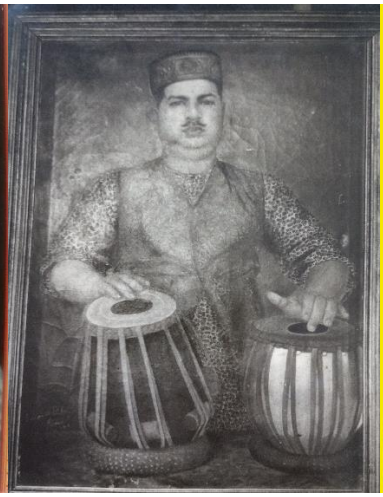

रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह **तबला वादन करते हुए तस्वीर** **शायरी करते समय की तस्वीर**

मोती महल रायगढ़

कथक नृत्य के कथा, अभिनय और उपदेश इन तीनों पक्षों पर इन्होंने प्रभावशाली कार्य किया जिसका परिणाम वर्तमान के कथक नृत्य मे देखने को मिलता है। कथक नृत्य को समृद्ध और अर्थमय बनाने का श्रेय इन्हे ही जाता है। इनकी विचारधार अलग ही चरमसीमा पर थी, जिसके कारण कथक नृत्य के हर पहलू पर इनका चिन्तन रहाँ,जिसके परिणामस्वरूप इन्होंने संगीत-नृत्य पर आधारित पाँच ग्रंथों की रचना की :-

कथक नृत्य आधारित – **नर्तनसर्वस्वम्** (वजन 6.5 किलो)

ताल पर आधारित – **तालतोयनिधि** (वजन 32 किलो)

पखावज (परनों) पर आधारित – **मुराजपर्णपुष्पाकर** (तलतोयनिधि के वजन जितना ही)

तबलर पर आधारित – **तालबलपुष्पाकर** (अपूर्ण)

रागों पर आधारित – **रागरत्नमंजूषा** (अपूर्ण)

इन ग्रंथों की अपनी-अपनी विशेष खूबी है जैसे – नर्तनसर्वस्वम मे 1000 पृष्ठ है जिसमे से 350 पृष्ठ मे भूमिका मात्र है और यह ग्रंथ कथक नृत्य का पहला मूल ग्रंथ है जिसमे सप्तसुरों का नृत्य, घुँघरूओ की संरचना, 16 प्रकार के गति भेद, 3 प्रकार के तांडव भेद, नायक-नायिका भेद, कथक नृत्य पर विशेष उपयोगी 16 शृंगार जिसमे से 4 शृंगार राजा चक्रधर

सिंह जी की विचारसक्ति की उपज है और नायिकाओं के चाल के अनुसार गति आदि। तलतोयनिधि ग्रंथ मे 1 मात्र से 380 मात्र तक के तालों का चक्र रंगीन और साज सज्जादार रूप मे बनाए गए है। मुरजपरणपुष्पाकर इसके शब्दों से ही इसका अर्थ प्रकट होता है, मुरज अर्थात पखावज और परन अर्थात कथक नृत्य मे प्रयुक्त पखावज के बोल। इस ग्रंथ मे अनेकों प्रकृति प्रधान, नायक-नायिका प्रधान, तांडव-लास्य प्रधान, प्राणी प्रधान, शब्द प्रधान आदि प्रकार के मौलिक बन्दिशों का विवरण है। तालबलपुष्पाकर ग्रंथ मुख्य रूप से तबले पर आधारित है जिसमे तबले का इतिहास दिया गया है साथ ही इसमे प्रचलित ताल त्रिताल को "राकेंदु" ताल कहाँ गया है जिसके 2057 उपभेदों का भी वर्णन है। यह ग्रंथ अपूर्ण है। रागरत्नमंजूषा ग्रंथ मे 1200 रागों का वंशवृक्ष बनाया गया है। यह ग्रंथ भी अपूर्ण है।

ना केवल साहित्यिक पक्ष प्रोयोगिक पक्षों पर भी ध्यान देते हुए कथक नृत्य मे उपयोगी घुँघरुओं पर भी इन्होंने कार्य किया है। उन्होंने नृत्य मे ध्वनि के महत्व को हर परिप्रेक्षय से देखा। नृत्य मे शब्दों, लय या ध्वनि का भार, पैरों की थाप, हाथों से बजती सशब्द क्रियाएँ या घुँघुरुओं की झंकार से ही ध्वनि उत्पन्न होती है। पैरों पे बंधे घुँघरुओं पर विचार व चिन्तन कर उन्होंने घुँघरुओं की तुलना पंचमहाभूत अर्थात अग्नि, वायु, पृथ्वी, जल और पंचज्ञानेन्द्रियों अर्थात आँख, कान, नाक, जीवः और त्वचा से की है। कमल के समान यह पंचमुखी घुँघरू पंचधातु अर्थात लोहा, पीतल, काँसा, सीसा और तांबे के मिश्रण से बनाया गया था। जिन घुँघरूओं का उपयोग कथक नृत्य मे होता आ रहाँ है वे पीतल धातु के बने होते है जिनमे चार कालिया होती है तथा जड़ाई का कार्य होत है। इनसे जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसमें 'छन-छन' शब्द निकलते है। इन घुँघरूओं के आपस मे रगड़ व टक्कर से जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसका महत्व अन्य शास्त्रीय नृत्यों के बजाए कथक नृत्य मे अधिक प्राप्त होता है। राजा चक्रधर सिंह जी ने ध्वनि के महत्व पर अधिक कार्य किया है, चाहे वो घुँघरुओं की ध्वनि हो या बन्दिशों मे उपचारण किए गए शब्दों की ध्वनि। इनके बोल व बन्दिशों मे ध्वनियात्मक सुंदरता प्राप्त होती है,जिससे सुनने मात्र से ही बोलों के अर्थ बया हो जाते है जैसे –

<u>तोपखानी परण</u>

+ धत् धत् धा-धक धमधम धमकत ।

2 है-तुफं _गधक धमधम धमकत ।

0 धाँय धत् धत् धा-धक धमधम ।

3 धमकत है-तुफं _गधक धमधम ।

+ धमकत धाँय धत् धत् धा-धक ।

2 धमधम धमकत है-तुफं _गधक ।

0 धमधम धमकत धाँयधक धमधम ।

3 धमकत धाँयधक धमधम धमकत ।

+ धाँय ।।

राजा साहब ने कथक नृत्य मे एक और नवीन कार्य किया बोलों के भावों व शब्दों के अनुसार हर बोलों का नामकारण किया गया, जिससे बोलों के पढ़न्त या नाम से ही उसके अर्थों की अभिव्यक्ति हो जाती है। इस परण के उपचारण से तोपों की ध्वनि का भाव प्रकट होता है। 'धमधम' शब्द से तोपों के गरजने का पता चलता है, 'धाँय' शब्द से यह पता चलता है की किस तरह तोप से गोला दागने से उससे धाँय की ध्वनि उत्पन्न होती है।

धाधावली

+ धाकिटतक धुमकिटतक धाकिटतक धुमकिटतक ।

2 धाकिटतक धुमकिटतक धाS तकि ।

0 टत का किड़तक तकधाS ।

3 Sत किट धाS SS ।

+ तकिट धिकिट धात्रक धिकिट ।

2 कताग दिगन धिंSत ड़ाSन ।

0 तSकधि किटधागे तिटकत गदिगन ।

3 धाता धाता धा-धा Sधा ।

+ धाS Sधा SSधा SSधा ।

2 SSधा SSधा धाकिड़तक धुमकिड़तक ।

0 धाकिड़तक धुमकिड़तक धाS धाS ।

3 Sधा SSधा SSधा SSधा ।

+ SSधा धाकिड़तक धुमकिड़तक धाकिड़तक ।

2 धुमकिड़तक धाS धाS Sधा ।

0 SSधा SSधा SSधा SSधा ।

3 धाकिड़तक धुमकिड़तक धाकिड़तक धुमकिड़तक ।

+ धा।।

यह रचना शब्द प्रधान है अर्थात इसमे एक ही शब्द की पुनरावृति की गई है। धाधावली मे 'धा' शब्द का प्रयोग बहुत ही सुंदर रूप मे किया गया है। कुटाक्षरों के समूह मे 'धा' शब्द विशेष है।

भरतमुनी रचित नाट्यशस्त्र के अनुसार-"स्वयं मे अभिव्यक्ति का अत्यंत सशक्त माध्यम होते हुए भी नाट्य मे प्रसंगवश शोभा की सृष्टि के लिए नृत्त का समावेश किया जाता है।" अर्थात नृत्त केवल अंगसंचालन की क्रिया है, जिसे सुंदरता हेतु उपयोगी मान गया है। किन्तु नृत्त भावहिन होकर भी भाव प्रतीत करने की संभावना रखता है। इस बात को सत्य रूप देने मे राजा चक्रधर सिंह जी ने बहुमूल्य कार्य किया है। इनकी बन्दिशों मे प्रकृति, तंत्र-मंत्र, प्राणी, नायक-नायिका, लय, जाति, वनस्पति और आभूषण आदि प्रधान बोल है। जो परण या तोड़े के रूप मे किए जाते है और कथक नृत्य मे परण और तोड़ा नृत्त की श्रेणी मे आते है। इनकी बन्दिशों मे प्रकृति और भक्ति के भाव अधिक प्राप्त होते है। इसका कारण यह रहाँ है की वे स्वयं प्रकृति प्रेमी रहे व एक अच्छे उपासक भी। कथक नृत्य के नृत्त पक्ष जिसमे केवल निरर्थक शब्दों का समावेश होता था उसे अर्थमय बना के अध्यात्म से जोड़ने का इनका प्रयास सुंदर और सफल रहाँ। राजा साहब जब प्रकृति की सुंदरता और अनेकों रूप देख प्रभावित होकर नई रचना करते, तब इन रचनाओं को दरबार मे उपस्थित आचार्यों के समक्ष प्रस्तुत करते फिर विचार विमर्ष किया जाता था। शास्त्र संगत व नवाचार की दृष्टि से उन रचनाओं को तबले पर बैठया जाता था, तदउपरान्त अंग संचालन पर काम किया जाता था। अन्य घरानों मे जो सुंदर व चमत्कारी तत्व होते थे उसे चुनकर रायगढ़ घराने के बन्दिशों मे डाला गया।

राजा साहब के शब्दों में, "जब तक चारों अंग पूरे ना हो तब तक संगीत पूरा नहीं होता।" प्राचीन आचार्यों ने संगीत के चार अंग माने है: गान, वाद्य, नृत्य और अभिनय। नृत्य ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमे संगीत के यह चारों अंग पूर्ण होते है। राजा साहब ने अपने बन्दिशों मे इन सभी अंगों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया और उनका यह नवीन कार्य सफल व कथक नृत्य के लिए अतुलनीय रहाँ। उन्होंने ऐसी ही कई रचनाएँ की जो संगीत जगत मे एक नया अध्याय जोड़ सकता है ना जाने कितने ही अनमोल शब्दों से भरा होगा वह ग्रंथ जिसकी रचना राजा साहब द्वारा हुई है। मोती महल मे किसी वीरान कमरे मे चंदन की पेटी मे रखा वह ग्रंथ समय के साथ जर्जर अवस्था मे परिवर्तित ना हो जाए इस बात का दर रायगढ़ घराने के कलाकारों को सदेव झँझोर देता है। समय रहते अगर उसका प्रकाशन ना हुआ तो कथक जगत उस अमूल्य ज्ञान से अछूता रह जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. महंत, भगवान दास माणिक, “कथक रायगढ़ घराना” बी. आर. रिदमस, दिल्ली, 2015 पृ.118
2. महंत, भगवान दास माणिक, “कथक रायगढ़ घराना” बी. आर. रिदमस, दिल्ली, 2015 पृ.57
3. राम, कार्तिक, “रायगढ़ में कथक” उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादेमी के लिए राज कमाल प्रकाशन, 1982, पृ.19
4. सफरनाम,चक्रधर समारोह आयोजन समिति, रायगढ़, 2010 पृ. 25
5. सफरनाम,चक्रधर समारोह आयोजन समिति, रायगढ़, 2010 पृ. 26
6. माणिक, मोहनी, “गुरू पं.कल्याण दास महंत की जीवनी एवं कथक नृत्य मे योगदान”, शोध प्रबंध-इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, पृ.26
7. राम, कार्तिक, “रायगढ़ में कथक” उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादेमी के लिए राज कमाल प्रकाशन, 1982, पृ.38